ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 127-129

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

तुलसी के मानस में स्त्री अभिव्यक्ति

1. सुधांशु प्रकाश शुक्ल
2. डॉ0 वन्दना पाण्डेय

1. शोध अध्येता, 2. शोध पर्यवेक्षक, गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कालजे मुरादाबाद (उ0प्र0) भारत

Received-07.11.2023, Revised-13.11.2023, Accepted-18.11.2023 E-mail: sudhanshu.hep@gmail.com

***सारांशः** महान लोकनायक गोस्वामी तुलसीदास के महाकाव्य श्रीरामचरितमानस में स्त्री जाति के विभिन्न आयामों का बड़ी कुशलता से विशद वर्णन किया गया है, जिसमें वह नारी के उत्तम स्वरूप, जो सांस्कृतिक आदर्शों की कसौटी पर खरा उतरता है, का प्रबलतम रूप से समर्थन करते हैं। वह नारी को पतिव्रत धर्म से युक्त त्याग की प्रतिमूर्ति, सेवाभावना से परिपूर्ण, ममतामयी और कर्तव्यपरायणा के रूप में वर्णित करते हैं। तुलसी नारी के स्त्रियोचित संपूर्णशील व मर्यादा से ओतप्रोत स्वरूप के समर्थक हैं। वास्तविक रूप में तुलसी की नारी अभिव्यक्ति में लोककल्याण साक्षात दृष्टिगोचर होता है।*

कुंजीभूत शब्द– आयाम, सांस्कृतिक आदर्श, कर्त्तव्यपरायणा, लोकनायक, नारी अभिव्यक्ति, पतिव्रत धर्म, प्रतिमूर्ति, सेवाभावना।

रामभक्तिसाहित्य इतना लोकप्रिय है कि यह प्रांतीय भाषाओं में ही नहीं, वरन विश्वसाहित्य का अभिन्न अंग बना। फलतः राम–कथा पर आधारित विशाल साहित्य हमारे सामने आया। रामकथा के समस्त पात्रों में भारतीय संस्कृति का आदर्श रूप परिलक्षित होता है। विशिष्ट रूप से नारी चरित्रों का वर्णन अत्यधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है। भक्तकवि कभी उन्हें भारतीय मूल्यों के प्रति असीम आस्थावान, त्याग की प्रतिमूर्ति, आदर्श पतिव्रता, विवेकवान, समर्पणशील, पति की रक्षिका, समय आने पर अपनी श्रेष्ठता भी सिद्ध करने वाली के रूप में परिभाषित करते हैं, तो कभी वे नारी को साधना के मार्ग में बाधक के रूप में दखेते हैं। मध्यकाल में भारतीय संस्कृति की रक्षा में अनेक कवियों ने बढ–चढ़ कर प्रतिभाग किया। दक्षिण में रामानन्द एवं उत्तर भारत में गोस्वामी तुलसीदास ने साहित्य सृजन कर जन–जन में चेतना का सचांर किया। रामभक्ति काव्य द्वारा जन जागरण करने वाले कई कवि हुए– जिनमें रामानंद, अग्रदास, ईश्वरदास, नाभादास, प्राणचंद, हृदयराम, केशवदास, गुरु गोविन्द सिंह प्रमुख हैं। महान वीर गुरु गोविन्द सिंह हिन्दू धर्म रक्षक एवं कवि हृदय सम्राट थे। उनके द्वारा रचे गए कुल 11 ग्रंथों में से एक 'रामावतार' को गोविन्द रामायण कहा जाता है। भक्तिकाल में अधिकतर कवियों ने प्रभु के साकार और निराकार रूप की स्तुति की है, परन्तु सगुणोपासक एवं रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि तुलसीदास नारी की पराधीनता की पीड़ा से द्रवित हो जाते हैं। वह पार्वती की माँ मैनावती के मुख से कहलवाते हैं :–

"कत विधि सृजी नारि जग मांही।
पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।।"

उनका स्पष्ट मत है कि नारी पुरूष की अधीनता में ही सम्मान की अधिकारिणी है। अन्य सभी स्थितियों में वह अन्ततः हास्य विनोद की पात्र बनकर ही रह जाएगी। उनका कथन है–

'जिमि स्वतन्त्र भए बिगरहिं नारी।'

यद्यपि यहाँ पर स्त्री को स्वतन्त्र मनुष्य मानने में कठिनाई थी? जब तुलसी स्त्री को साधक की दृष्टि से देखते हैं तो उसे बहुत ही श्रद्धेय मानते हैं एवं उसे उपास्य की श्रेणी में मानते हैं। तुलसी स्त्री के कुलटा रूप की घोर आलोचना करते हैं और वर्णित करते हैं कि इस प्रकार की नारियाँ शाश्वत समाज के शनैः–शनैः क्षरण के लिए जिम्मेदार हैं।

तुलसी केवल नारी के पतिव्रता रूप को ही सम्मानित मानते हैं और उसके प्रति ही भक्ति प्रकट करते हैं।
तुलसी की आदर्श स्त्री का चरित्र अत्यन्त दृढ़ है, जो निडर है, जो निर्भीक है और शत्रु के घर में भी सिंह गर्जना करने में सक्षम है।

तुलसी की नारी समाज की रीति नीति में आबद्ध है। प्रमुख रूप से तुलसी की नारी भावना दो रूपों में परिलक्षित होती है–

1. नारी पात्रों के चरित्र चित्रण में।
2. नारी के सैद्धान्तिक निरूपण में।

सैद्धान्तिक निरूपण प्रतिपाद्य विषय को प्रमुखतः दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम भाग में नारी धर्म सम्बन्धी विषय आता है, जबकि द्वितीय भाग में नारी निन्दा सम्बन्धी विषय आता है। यह बात भी विस्मृत नहीं की जा सकती है कि तुलसी की नारी सम्बन्धी उक्तियाँ दो दृष्टियों से ओतप्रोत हैं–प्रथमतः काव्य दृिष्ट के भेद से एवं दूसरे मोक्ष दृष्टि से। उनकी नारी पात्रों के दो वर्ग हैं–उत्तम और निम्न। तुलसी उसी को उत्तम श्रेणी में रख सकते हैं, जो रामभक्ति में समाहित हो, जो राम के प्रति सद्भाव रखती हों, राम के आदर्शों को मानने वाली हैं तथा उनके पद चिह्नों पर चलने वाली हैं, वे सु–नारी कहलाती हैं तथा जिन नारियों के हृदय में दुर्भाव हैं, रामभक्ति से विमुख हैं तथा राम के आदर्शों के विपरीत आचरण करने वाली हैं, वे नारियाँ निम्न नारियों के वर्ग में समाहित की गयी हैं। रामभक्ति में रत भरत जी सत्पात्र की श्रेणी में हैं जबकि उनकी माता कैकेयी तुलसी की दृष्टि में असत्पात्र मानी गयी हैं, क्योंकि वे रामभक्ति से विमुख हो जाती हैं। तुलसी दास जी उसे ही सत्पात्र मानते हैं, जो जीवनपर्यन्त सदाचरण करे तथा रामभक्ति में संलग्न रहे व किंचितमात्र भी भक्ति पथ से विलगित न हो।

तुलसी साहित्य का अध्ययन करने में जो नारी पात्र समाहित हैं। उनमें सु–नारियों की संख्या बहुत अधिक है, जो सदाचरण करने वाली हैं। आज के समय में भी वे प्रेरणा की पात्र हैं, जबकि निम्न नारियों की संख्या बहुत कम है। ऐसी निन्दनीय नारियाँ समाज को निम्नता की ओर ले जाने का कार्य करती हैं और भयानक सामाजिक विप्लव लाती हैं। ऐसी नारियों में मुख्यतः ताड़का, कैकेयी, मन्थरा व सूर्पणखा आदि हैं। ताड़का का वर्णन केवल दो पंक्तियों में किया गया है–

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

"चले जात मुनि दीन्हि देखाई।
सुनी ताड़का क्रोध करि धाई।। **(रामचरितमानस, 1/209/3)**

कैकेयी का चरित्र उच्च है उसमें भी ओछापन नहीं है, रानी की गरिमा है, सौतेले बेटों के प्रति अगाध प्रेम है। जब कैकेयी को राम के राज्याभिषेक का समाचार मिलता है, तो कैकेयी का ह्रदय हर्षोल्लास से भर जाता है तथा वह कहती है–

"सुदिनु सुमंगलदायकु सोई।
तोर कहा फुर जेहि दिन होई।। **(रामचरितमानस, 2/15/1–4)**

तथा कैकेयी का यह भी कथन है–

"यदि राम नयन का तारा है,
गोदी का भरत दुलारा है।"

और अन्त में मन्थरा के बहकावे में आकर कैकेयी ने अनुचित मार्ग का अनुसरण किया, परन्तु उसका दृढ़ता और कुशलतापूर्वक निर्वाह किया। राजा दशरथ के बार–बार समझाने व अनुनय–विनयोपरान्त भी अपने मार्ग से टस से मस नहीं हुई। कैकेयी यह जानते हुए भी कि उसका यह कृत्य अनुचित है, फिर भी अपने कृत्य के प्रति पुनर्विचार नहीं करती है। कैकेयी का आचरण चिन्त्य है। यद्यपि वैधव्य एक हिन्दू नारी के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है, तथपि विडम्बना यह है कि कैकेयी उसे मामूली क्षति ही समझ रही थी। स्वपुत्र भरत के द्वारा अपना तिरस्कार करने पर वह मौन धारण कर लेती है और कुछ भी नहीं कहती है। अन्ततः कैकेयी को आत्मग्लानि व लज्जा होती है, जो उसके ह्रदय की निर्मलता को ही वर्णित करता है। कैकेयी की जो निन्दा हुई है वास्तव में वह अभक्त ही निन्दा है। यहाँ पर परिस्थिति ने उसे विवश कर दिया है। महाकवि तुलसी की रामभक्ति के कारण ही उसे अपशब्द सुनने पड़े। मन्थरा के विषय में ईमानदारी से देखने पर यह प्रतीत होता है कि वह निष्कपट व निष्कलंक है। उसकी बुद्धि को देवी सरस्वती द्वारा भ्रमित किया गया, जो कि स्वयं में पूज्यनीय है और विद्या की देवी हैं, नारी द्वारा नारी को मति भ्रमित किया गया है। यहाँ पर पुनः ध्यान देने योग्य है कि नारी सरस्वती देवी को पुरूष देवताओं ने ऐसा करने लिए मजबूर किया है। यहाँ पर यह निष्कर्ष निकल कर आता है कि उक्त दोनों नारियाँ दोषी नहीं हैं। उनके पथ को कलंकित करने वाले कारक पुरूष हैं। मानस में वर्णित है–

"अजस पेटारी ताहि करि
गई गिरा मति फेरी।।" **(रामचरितमानस, 2/12)**

सूर्पणखा का वर्णन घृणित नारियों की श्रेणी में आता है, जो अपना बुरा तो करती ही हैं, साथ–साथ सामाजिक क्षति का कारण भी बनती हैं। तुलसी की मानस में सूर्पणखा का चारित्रिक वर्णन आरम्भ से ही निन्दा से पूर्ण है–

"सूपनखा रावन कै बहिनी।
दुष्ट ह्रदय दारुन जसि अहिनी।।
पंचवटी सो गइ एक बारा।
देखि बिकल भइ जुगल कुमारा।।" **(रामचरितमानस, 3/17/2, 4)**

उक्त वर्णन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि महाकवि के अनुसार, सूर्पणखा का यह आचरण नारी की पीड़ा का परिचायक है, परन्तु सामाजिक मर्यादा तथा नारी धर्म के विपरीत होने के कारण सर्वथा निन्दनीय है। इस कारण सूर्पणखा को बार–बार इधर से उधर घुमाया जाता है तथा कई बार समझाया जाता है, परन्तु सूर्पणखा स्वपीड़ा से उबर नहीं पाती है और अपने नॉक–कॉन कटवा लेती है। यहीं से रामकथा मोड़ लेती है। यह उचित कहा जा सकता है कि काम के वशीभूत सूर्पणखा ने नारी के शील और सामाजिक मर्यादा का अतिक्रमण किया है, किन्तु शास्त्रीय दृिष्ट से उसका अपराध इतना अनर्थकारी नहीं था कि उसके साथ ऐसा अमर्यादित व्यवहार किया जाए।

कौशल्या में मानवी का आदर्श है। वानरराज बालि की पत्नी तारा का भी महाकवि द्वारा आदर किया गया है। पत्नी की सीख न मानने पर वानरराज को अपने प्राण गँवाने पड़े। अन्त समय में इसी कारण प्रभु श्रीराम ने बालि को फटकारा था–

"मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना।
नारि सिखावनु करसि न काना ।।" **(रामचरितमानस, 4/9/5)**

अनसूया ने श्रद्धालु सीता को नारी–धर्म का उपदेश दिया है। वह कहती हैं–

"एकइ धर्म एक ब्रत नेमा।
काय वचन मन पति पद प्रेमा।" **(रामचरितमानस, 3/5/5, पृ. 692)**

वह कहती हैं कि पति की सेवा तन, मन, वचन, कर्म से करना ही स्त्री का परम कर्तव्य है– पतिव्रता स्त्री ही मोक्ष पद को प्राप्त करने की अधिकारिणी है। वह कहती हैं–

"बिनु श्रम नारि परम गति लहई।
पतिव्रता धर्म छाड़ि छल गहई।।"

पतिव्रत धर्म का पालन ही स्त्री जीवन का साध्य है। सीता जी आदर्श पतिव्रता स्त्री हैं। वह पति के साथ वन में जाती है, हंसते–हंसते सभी कठिनाइयों में पति का साथ देती हैं, प्राणप्रिय पति के चरणों की सेवा करना ही उनका परम धर्म है। अतः सीता आदर्शमयी पत्नी हैं। इसीलिए वह तुलसी की आदर्श पात्र हैं। तुलसी ने नारी के धर्म और अधर्म सम्बन्धी तथा पुरूष परतन्त्रता का जो निरूपण किया है। वह आज के समतावादी–सुधारवादी आलोचकों को सालता है। वह तुलसी की आलोचना करता है, परन्तु आलोचक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

इस बात का ध्यान नहीं रखते, कि तुलसी साहित्य का रचनाकाल उस समय का है, जब सनातन धर्म मुगल काल की भयानक त्रासदी से घोर संकट में था। आज भी उसका परिणाम हमारे समाज के लिए प्रेरणाप्रद एवं उपयोगी है, जो सामाजिक संरचना को दृढ़ आधार प्रदान करने के लिए अत्यावश्यक है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि अधिकतर कवियों ने स्त्री के पतिव्रत धर्म को ही श्रेष्ठ माना है। मध्यकालीन सामन्ती समाज में स्त्रियों को पथभ्रष्टता से बचाकर उनको गरिमापूर्ण स्थान दिलाने में तुलसी ने महती भूमिका निभाई है एवं सामाजिक एकता व सनातन धर्म को अक्षुण्ण बनाए रखने में सहयोग दिया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रामचरित मानस, तुलसीदास, गीताप्रेस गोरखपुर।
2. भक्ति काव्य में पितृसत्ता और स्त्री–विमर्श, शहनाज बानो, शिल्पायन, 10295, लेन नं. 1, वैस्ट गोरखपार्क, शाहदरा, दल्ली–110032.
3. तुलसी काव्य–मीमांसा, उदयभानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, सं 1966.
4. तुलसी ग्रंथावली, सं, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं. 1980–2015.
5. मध्ययुगीन हिंदी साहित्य में नारी भावना, डॉ. उषा पाण्डेय, हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली, 1989.
6. रामचंद्रिकाः केशवदास, सं. लाला भगवान दास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
7. 21 वीं सदी में नारी विमर्श–डॉ. अखिलेश कुमार सरोज 2023.
8. मानस माधुरी– डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र।
9. गोस्वामी तुलसीदास – रामचन्द्र शुक्ल।

*****